Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

छायावाद

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, (हिंदी विभाग),
मर्यादा देवी कन्या पीजी कालेज,
बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज,
उत्त प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 127-131
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 10 Oct 2020
Published : 20 Oct 2020

सारांश – कठोर नियंत्रण व बंधनों की प्रतिक्रिया स्वरूप ही स्वच्छन्दता का जन्म होता है। द्विवेदी युग में स्वच्छंद मन की प्रेममयी कतिवताएं छपती नहीं थीं। 1916 में लिखी निराला की जूही की कली को इसी के चलते किनारे कर दिया गया था। एक ओर भाषा और शैलीगत बंधन दूसरी ओर विषयगत बन्धन के चलते स्वच्छन्द प्रवृत्ति का जन्म हुआ। 1918 के बाद की सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी इस स्वच्छन्दता को प्रोत्साहित कर रहीं थीं। बढ़ती शिक्षा व्यवस्था तथा अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन भी वैचारिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होने में सहायक हुआ। एक ओर शेली, कीट्स, वायरन की स्वच्छंद और मुक्त ह्रदय की कविता थी दूसरी ओर द्विवेदी कालीन मर्यादाशील कविता। युवा वर्ग का आकर्षण स्वच्छन्द विचारधारा की ओर उन्मुख हुआ जिसका प्रमाण बंगाल रविन्द्र नाथ टैगोर की कविता की धूम मच जाना। रविन्द्र की कविता मुक्त और स्वच्छंद मन की, मानवतावादी तथा आध्यत्मिकता की पुट लेकर आई।

मुख्य शब्द – छायावाद, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, द्विवेदी युग

इस प्रकार द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता के प्रतिरोध अंग्रेजी रोमान्टिक कवियों की प्रेरणा, तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ तथा रविन्द्र की कविताओं का बंगाल में धूम मचा देना छायावाद की बुनावट में मदद्गार साबित हुई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक ऐसी सशक्त विचारधारा का नाम जिनसे छायावाद की आलोचना शुरू हुई। छायावाद के स्वरूप, उसके आन्तरिक भावों, रहस्यवाद, लाक्षणिकता प्रकृति चित्रण आदि को लेकर शुक्ल जी ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में बहुत कुछ कहा, बहुत कुछ सुना। हमें यहां छायावाद के स्वरूप, उसकी आन्तरिक व वाह्य बनावट, उस पर वाह्य विचारधारा का प्रभाव उसमें जीवन मूल्य आदि पर विचार करना है जो विविध विद्वानों

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

के मत मतान्तरों से निकलकर हमारे सामने आयेगा। आ0रा0च0 शुक्ल ने छायावाद को जिस स्वरूप में, जिस लिबाज में देखा उसमें उनको कल्पनावाद, कलावाद, अभिव्यंजनावाद आदि का प्रभाव दिखा। भावानुभूति के स्थान पर कल्पना का विधान दिखा। अप्रस्तुत योजना, लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और विचित्रता दिखी, तथा अभिव्यंजना प्रणाली व विचित्रता ही सब कुछ समझी जाने लगी। नाना अर्थभूमियों पर काव्य का प्रसार रूका सा दिखा। ''छायावाद नाम चल पड़ने का परिणाम यह हुआ कि बहुत से कवि रहस्यात्मकता अभिव्यंजना के लाक्षणिक वैचित्रय .....चित्रमयी भाषा और मधुमयी कल्पना को साध्य मानकर चले।''[1] (हि0सा0का0 इति0 पृ0–445) शुक्ल जी छायावादी कविता का संबंध बांग्ला से जोड़ते हुए पाश्चात्य ढ़ाँचे में देखा ''इसाई संतों के छायाभास (फैटासमाटा) तथा यूरोपीय काव्य क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद (सिंबलिज्म) के अउकरण पर रची जाने के कारण बांग्ला में ऐसी कविताएं छायावाद कही जाने लगी थी। यह वाद क्या प्रकट हुआ एक बने बनाए रास्ते का दरवाजा खुल पड़ा और हिन्दी के कुछ नए कवि उधर एकबारगी झुक पड़े''[2] (हि0सा0का0 इति0 पृ0–444) शुक्ल जी छायावाद के चलन के पीछे बाहरी ही नही द्विवेदी कालीन रूखी इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में भी देखा। अर्थभूमि या वस्तुभूमि का संकोच हो जाना तथा वस्तुविधान का भुला देना शुक्ल जी की आपत्ति का मूल कारण था। शुक्ल जी ने देखा कि छायावाद के समर्थन में लोग कहने लगे कि जीवन व जगत् में एक नई कविता का संचार है, प्रकृति पर प्रेममय दृष्टि डालकर, रहस्य भरे सच्चे संकेतों को परखकर स्वच्छंद मार्ग निकालने का काव्य है, अंग्रेजी व बांग्ला साहित्य के प्रभाव से कवियों के मन में एक आंधी उठ रही थी जिसके चलते उनको छायावाद की राह पकड़नी पड़ी। शुक्ल जी ने इन सब आडम्बरों को सिरे से खारिज किया– ''न आंधी थी न तूफान न कोई कसक थी न वेदना, न प्राप्त युग की नाना परिस्थितियों का हृदय पर कोई नया आघात था, ...इन बातों का कुछ अर्थ तब हो सकता था जब काव्य का प्रवाह उस ओर मुड़ता जिन पर ध्यान न दिया गया रहा होता।''[3] (हि0सा0का0 इति0 पृ0–444) शुक्ल जी छायावाद में जन मानस के भावों व प्रवृत्तियों की खोज कर रहे थे। जब नही दिखा तो छायावाद पर आक्रमण किया। पर ऐसा नहीं है कि शुक्ल जी ने सारे छायावाद को सिरे से कमियों का लिबाज पहनाया जहां उनको अपने मानक पर छायावाद दिखा उसकी प्रशंसा भी की। ''छायावाद की शाखा के भीतर धीरे–धीरे काव्य शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ। उसमें कोई संदेह नहीं उसमें भावावेश की आकुल व्यंजना लाक्षणिक वैचित्र्य, मूर्त प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता विरोध चमत्कार कोमल पद विन्यास इन्यादि काव्य का स्वरूप संघटित करने वाली प्रचुर सामग्री दिखी।''[4](हि0सा0का0 इति0 पृ0–447) शुक्ल जी मानते हैं कि यदि आध्यात्मिक रहस्यवाद का नूतन रूप हिंदी में न आया होता और अभिव्यंजना की यह शैली स्वतंत्र रूप से फैली होती तो घनानंद की जैसी लाक्षणिकता का आभास हमें छायावाद में भी दिखता। क्योंकि शुक्ल जी का मानना है– छायावाद जहां अध्यत्मिक प्रेम लेकर चला वहा तक तो रहस्यवाद, प्रतीकवाद, चित्र भाषावाद की शैली बनकर प्रेमगान ही करता रहा है। छायावादी कवियों का स्त्री के नाना अंगो के आरोप के बिना प्रकृति का कोई दृश्य न दे पाना, ऊषा सुन्दरी के कपोलों की ललाई, रजनी के जटिल केश कलाप, दीर्घ निश्वास, किरन, लहर, चंद्रिका, छाया, तितली सबका अप्सरा या परियां बनकर सामने आना, चुबंन, अलिंगन, मधुग्रहण कामिनी की क्रीड़ा इत्यादि शुक्ल जी को छायावाद के प्रति उदास बनाते हैं।

डा0 नामवर सिंह का मानना है कि ''छायावाद समूचे जीवन से दूर नहीं केवल उसके व्यक्त वस्तुगत (आब्जेक्टिव) रूप से दूर था ''एक ही सत्ता के अव्यक्त और व्यक्त दो पहलू है तो एक को सत्य व पूर्ण कहना भ्रांति

है, व्यक्त से दूर रहने वाला उतना ही एकांगी है जितना अव्यक्त से दूर रहने वाला। यदि व्यापकता की दृष्टि से देखा जाय तो अव्यक्त अधिक रहस्यगर्भी और असीम है। नए छायावादी युग की उदात्त भावना को इस असीम अव्यक्त सत्ता में विचरण करना अधिक सुखद मालूम हुआ।''[5] हिन्दी गद्य का पर्व (नामवर सिंह, पृ0121) नामवर जी कहते हैं शुक्ल जी ने इस भावना अर्थात असीम अव्यक्त सत्ता की भावना को जीवन से दूर रखा, जबकि उनका मानना है कि जीवन का एक पक्ष भावगत भी है, जो कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। छायावाद रहस्यवाद ने प्रधानतः भाव पक्ष को अपनाया। शुक्ल जी का छायावाद से विरोध का एक कारण और नामवर जी बताते हैं– ''शुक्ल जी को विश्वास न था कि ये कवि सचमुच ही अव्यक्त से प्रेम करते हैं। परन्तु सच तो यह है कि छायावादी काव्य में भावों का उदात्तीकरण ही महान् अव्यक्त सत्ता का रूपधारण कर लेता है। .....छायावादी कवियों की कविताओं का आधार भले ही मानवीय प्रेम रहा हों, परन्तु उच्चदशा में उस अशरीरी भावना ने यदि वैयक्तिकता की स्थूल सतह छोंडकर किसी उदात्त अव्यक्त सत्ता का अनुभव किया होता तो क्या आश्चर्य?''[6] डॉ0 नामवर सिंह ने शुक्ल जी के कलावाद का भी सामना किया जिसके आधार पर शुक्ल जी ने छायावाद को नकारा था। नामवर जी का मानना है कि ''उच्चकोटि के छायावादी कवियों में कलावाद कभी आया ही नहीं। रसवादी आचार्य को केवल अलंकारवाद का विरोध करना था और उन्होंने यूरोपीय कलावाद के आगमन का संकट कालीन भोपू बजाना आरम्भ कर दिया। ऐसा लगता है कि समीक्षा को छोड़कर हिंदी के अन्य क्षेत्रों में उस समय यूरोपीय कलावाद आया ही नहीं। आचार्य ने केवल आसमान मे मुक्का मारा।''[7]

डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी अपने साहित्य और संवेदना के विकास में कहते हैं– ''कभी–कभी हिन्दी समीक्षा में छायावाद शब्द एक दुर्वचन के रूप में प्रयुक्त होता दिखता है। भावुकता, कल्पना विलास, यथार्थ से लगाव और जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में मधुचर्या, कहा, इन विविध मनः स्थितियों को वर्णित करने के लिए एक मोटा शब्द– छायावाद चल जाता है। यह परिस्थिति जहां अति सरलीकरण से उत्पन्न हुई है वहीं अनेक विभ्रमों को उपजाती है। .....यह सचमुच एक विचित्र स्थिति है कि साधारण ढ़ग से छायावाद कहने से चाँदनी रात, नौका बिहार, जूही की कली आदि कविताओं की याद अधिक दिलाई जाती है, कामायनी, राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास को पृष्ठभूमि में डाल दिया जाता है। छायावाद का यह मानचित्र बनाने में कुछ समीक्षकों का योगदान है जो छायावाद को मूलतः प्रकृति संबधी काव्य मानना चाहते थे।''[8] रामस्वरूप जी स्पष्ट कहते है कि ''छायावाद महज संध्या सुंदरी, चाँदनी रात की नौका बिहार, का चित्र नही है वह मूलतः शक्ति काव्य है।, पुर्नजागरण चेतना का व्यापक और सूक्ष्म रूप है और अपनी अर्थ प्रक्रिया में मानव व्यक्तित्व को गहरे स्तरों पर समृद्ध करता है। .....यह अधिक सर्जानात्मक मानवीय संस्कृति के विकास का आख्यान है, उसके वर्तमान संकट के बचाव की संभाव्य दिशा संकेतित है।''[9] चतुर्वेदी जी 'विकल बिखरे शक्ति के विद्युतकण' जिसे इकट्ठा करने की बात मनु से करते हुए प्रसाद जी कहते हैं– ''विजयिनी मानवता हो जाय'' को छायावाद मानतें हैं। ''शक्ति की करो मौलिक कल्पना'' निराला जी जब कहते हैं तो उसे छायावाद मानते है, होगी जय, होगी जय, को छायावाद की मूल संवेदना मानते हैं। चतुर्वेदी जी दो कदम आगे बढ़ कर छायावादी संवेदना को मध्य कालीन भक्ति काल के कवियों की संवेदना से ऊपर उठा दिया है– ''ऐहिक जीवन और शरीर का महत्व जिसे मध्यकालीन संतों और कवियों ने पानी का बुलबुला और काग–गीध का भोजन कहा था .....सन्यास वैराग्य तपस्या और परलोकवाद में आस्था जैसे मूल्यों के स्थान पर अब ऐहिक जीवन, इहलौक और मानव शरीर के आकर्षण का महत्व प्रतिपादित होता है। निष्काम कर्म की जगह प्रसाद की कामायनी में कर्म का भोग का गुण गान हुआ है।

कबीर, सूर, तुलसी, जायसी की भक्ति में संसार का निषेध करके परम तत्व की ओर मन ले जाने की उपक्रम है। छायावादी कवि इस संसार को पूरी तरह साकार कर परम तत्व से अभिन्न मानते हैं। हिन्दी मानसिकता की विश्व दृष्टि पुनर्जागरण के संक्रमण में जैसे पूरी तरह से घूम गयी हो।''[10]

डॉ0 बच्चन सिंह आधुनिक साहित्य के इतिहास में छायावाद नामकरण जो कि रूढ़ हो गया था को असंगत मानते हैं उनका कहना है ''हिन्दी साहित्य में यह युग छायावाद नाम से रूढ़ हो गया है। पर यह शब्द न अपेक्षित अर्थ दे पाता है न तत्कालीन काव्य का विशेषण बन पाता है। पूर्व स्वच्छंदतावादी काव्य धारा से संबन्ध न करने के कारण शुक्ल जी ने उसे बाहर से आई हुई वस्तु कहकर तिरस्कार किया और केवल शैली वैचित्र्य के रूप में ग्रहण किया। छायावादी काव्य शैली को वे फ्रांस के रहस्यवादी कवियों के प्रतीकवाद से जोड़ते हैं। ''वस्तुतः छायावाद रूपी गंगावतरण की यह धारणा (यारोपीय काव्य क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद के अनुकरण पर रची जाने के कारण बंगाल में ऐसी कविताएं छायावादी कही जाने लगी थीं।) कोरी काल्पनिक है। बंगाल में किसी प्रकार की कविता को छायावादी की संज्ञा नहीं दी गई न तो हिन्दी का छायावाद ब्रिटेन से सात समुंद्र पार करता हुआ बंगाल पहुँच कर हिंदी में आया।'' ''यह अपने देश की उस बेचैनी का परिणाम है जो सास्कृतिंक राजनीतिक पुर्नजागरण में दिखाई पड़ता है, जिसका सीधा सम्बन्ध नई मूल्य दृष्टि से है .....निश्चय ही उसकी ऐतिहासिक शक्तियां अन्य देशों से भिन्न न थीं।''[11] छायावाद के सम्बन्ध में वाजपेयाी जी का विचार था कि छायावाद की काव्य शैली यूरोप से बंगाल होती हुई हिन्दी में आई। इस पर रविन्द्रनाथ ठाकुर का स्पष्ट प्रभाव है। वास्तव में छायावाद का सामाजिक संदर्भ जितनी स्पष्टता के साथ वाजपेयी जी ने बताया है उतना उनकी पीढ़ी के किसी अन्य समालोचक ने नहीं बताया। छायावाद को इसाईयत से प्रभावित रविन्द्रनाथ से प्रभावित जब शुक्ल जी ने बताया तो आलोचकों की पूरी टोली खड़ी हो गई उनके विराध में। जबकि वाजपेयी जी स्पष्ट रूप से शुक्ल जी का समर्थन कर रहे है। जिस रहस्यवाद को शुक्ल जी ने छायावाद में हानिकारक बताया वाजपेयाी जी उसी रहस्यवाद में समरसता को खोजते हैं। अचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी छायावाद का लक्षण ही यह बताते हैं– मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है। जयशंकर प्रसाद में वाजवेयी जी अपना आदर्श कवि रूप पाते हैं और प्रसाद में प्रेम, व रहस्यवाद के धरातल को वे श्रेष्ठ और उच्च काटि का मानते हैं। छायावाद को बाहरी, रहस्यवादी, आदि आरोप लगाकर शुक्ल जी ने शैली मात्र कहा, उसी छायावाद में नन्ददुलारे वाजपेयी जी ने प्रेम, रहस्यभाव, यूरोप का प्रभाव, रविन्द्र व बांग्ला का प्रभाव स्वीकार कर उसमें आध्यात्मिक छाया का भान करते हैं।

डॉ0 नगेन्द्र छायावाद का स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह मानते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है।'' जीवन के प्रति एक विशेष प्रकार का भावत्मक दृष्टिकोण है। उन्होंने छायावाद की मूल प्रवृत्ति के विषय में लिखा है कि ''वास्तव पर अन्तर्मुखी दृष्टि डालते हुए उसको वायवी अथवा अतीन्द्रीय रूप देने की प्रवृत्ति ही मूल वृत्ति है। उनके अनुसार युग की उद्‌बुद्ध चेतना ने वाह्य अभिव्यक्ति से निराश होकर जो आत्मबद्ध अंतर्मुखी साधना आरंभ की वह काव्य में छायावाद के रूप में अभिव्यक्त हुई। नगेन्द्र जी छायावाद को अतृप्त वासना और मानसिक कुंठाओं का परिणाम स्वीकार करते हैं। डॉ0 देवराज छायावाद को पौराणिक धार्मिक चेतना के विरूद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह स्वीकार किया है। प्रसाद जी वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति जब हिन्दी में होने लगी तब उसे छायावाद कहा। गंगा प्रसाद पाण्डेय कहते हैं छायावाद नाम से ही उसकी छायात्मकता

स्पष्ट है। विश्व की किसी वस्तु में एक अज्ञात प्राण छाया की झांकी पाना अथवा उसका आरोप करना ही छायावाद है। शांति प्रिय द्विवेदी जी छायावाद और रहस्यवाद में गहरा संबंध स्थापित करते हैं तथा कहते है जिस प्रकार मैटर आफ फैक्ट (इतिवृत्तात्मक) के आगे की चीज छायावाद है, उसी प्रकार छायावाद के आगे की चीज रहस्यवाद है।

डॉ0 राम कुमार भी छायावाद और रहस्यवाद में कोई अन्तर नहीं माना आत्मा और परमात्मा के गुप्त वाग्विलास को रहस्यवाद कहते हैं और उसी को छायावाद कहते हैं। महादेवी वर्मा छायावाद का मूल सर्वात्मवादी दर्शन में माना। उनका कहना है छायावादी कवि मूर्त अमूर्त मिलाकर पूर्णता पाता है। उपर्युक्त अनेक परिभाषाओं से एक बात तो स्पष्ट है कि छायावाद की एक सर्वसम्मत परिभाषा नही बन सकीं। पर छायावाद स्वच्छन्दतावाद के काफी निकट हैं। आधुनिक काल के छायावाद का निर्माण भारतीय और यूरोपीय भावनाओं के मेल से हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्करण 2014 पृ0 445।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्करण 2014 पृ0 444।
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्करण 2014 पृ0 444।
4. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्करण 2014 पृ0 447।
5. हिंदी का गद्य पर्व डॉ0 नामवर सिंह, संस्करण 2010 पृ0 121।
6. हिंदी का गद्य पर्व डॉ0 नामवर सिंह, संस्करण 2010 पृ0 121।
7. हिंदी का गद्य पर्व डॉ0 नामवर सिंह, संस्करण 2010 पृ0 122।
8. हिंदी साहित्य व संवेदना का विकास, डॉ0 राम स्वरुप चर्तुवेदी, संस्करण सोलहवां 2002, पृ0 107।
9. हिंदी साहित्य व संवेदना का विकास, डॉ0 राम स्वरुप चर्तुवेदी, संस्करण सोलहवां 2002, पृ0 110।
10. हिंदी साहित्य व संवेदना का विकास, डॉ0 राम स्वरुप चर्तुवेदी, संस्करण सोलहवां 2002, पृ0 112।
11. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, संस्करण 2003, पृ0 137–138।